Written by दयानंद पांडेय
Wednesday, 09 March 2011 02:25

: □□□□□□□□ : □□□□□□□ - □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ (10) : उत्तर में यह कि एक गांव की एक ठकुराइन भरी जवानी में विधवा हो गईं। बाल बच्चे भी नहीं थे। लेकिन जायदाद ज्यादा थी और सुंदरता भी भरपूर। उनकी पढ़ाई लिखाई हालांकि हाई स्कूल तक ही थी तो भी ससुराल और मायके में उनके बराबर पढ़ी कोई औरत उनके घर में नहीं थी। औरत तो औरत कोई पुरुष भी हाई स्कूल पास नहीं था।

सो ठकुराइन में अपने ज्यादा पढ़ लिखे होने का गुमान भी सिर चढ़ कर बोलता था। इस तरह सुंदर तो वह थीं ही तिस पर 'पढ़ी लिखी' भी। सो नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देतीं। लेकिन उनका दुर्भाग्य था कि पति की दुर्घटना में मृत्यु हो जाने से वह जल्दी ही विधवा हो गईं। मातृत्व सुख भी उन्हें नहीं मिल पाया। शुरू में तो वह सुन्न पड़ी गुमसुम बनी रहीं। पर धीरे-धीरे उन का सुन्न टूटा तो उन्हें लगा कि उनके जेठ और देवर दोनों की नजर उनकी देह पर है। देवर तो मजाक ही मजाक में उन्हें कई बार धर दबोचता। उन्हें यह सब अच्छा नहीं लगता। वह अपनी मर्यादा में ही सही इसका विरोध करतीं। लेकिन मुखर नहीं होतीं। फिर एक दुपहरिया जब अचानक उनके कमरे में जेठ भी आ धमके तो वह खौल पड़ीं। हार कर वह चिल्ला पड़ीं और जेठानी को आवाज दी। जेठ पर घड़ों पानी पड़ गया था और वह 'दुलहिनि-दुलहिनि' बुदबुदाते हुए सरक लिए। जेठ तो मारे शर्म के सुधर गए पर देवर नहीं सुधरा। हार कर उन्होंने सास और जेठानी को यह समस्या बताई। जेठानी तो समझ गईं और अपने पति पर लगाम लगाई लेकिन सास ने घुड़प दिया और उल्टे उन्हीं पर चरित्रहीनता का लांछन लगा दिया। सास बोली, 'एक बेटे को डायन बन के खा गई और बाकी दोनों को परी बन के मोह रही है। कुलटा, कुलच्छनी!'

ठकुराइन सकते में आ गईं। बात लेकिन थमी नहीं। बढ़ती गई। बाद के दिनों में खाने, पहनने, बोलने बतियाने में भी बेशऊरी और चरित्रहीनता छलकने के आरोप गाढ़ होने लगे। हार मान कर ठकुराइन ने अपने पिता और भाई को बुलवाया। बीच-बचाव रिश्तेदारों, पट्टीदारों ने भी किया-कराया। लेकिन वह जो कहते हैं कि, 'मर्ज बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की।' और आख़िरकार ठकुराइन ने एक बार फिर अपने पिता और भाई को बुलवाया। फिर जमीन जायदाद और मकान पर अपना कानूनी दावा ठोंक दिया।

अंततः पूरी जायदाद में तीसरा हिस्सा अपने नाम करवा कर वह अलग रहने लगीं। अब जेठ और देवर उनके ख़िलाफ खुल कर के सामने आ गए। उनको तरह-तरह से परेशान करते, अपमानित करते। लेकिन वह ख़ामोश रह कर सब कुछ पी जातीं। लेकिन एक दिन उन्हों ने ख़ामोशी तोड़ी और ऐसे तोड़ी की पूरा गांव हैरान रह गया।

उन्होंने सारा शील-संकोच, परदा-लिहाज तोड़ा और अपने पति का कुरता पायजामा पहन लिया। अपने पति की लाइसेंसी दोनाली बंदूक जो अब उनके नाम स्थानांतरित हो चुकी थी, उठाई और घर से बाहर आ कर अपने जेठ और देवर को ललकार दिया। लेकिन जेठ, देवर घर से बाहर नहीं निकले घर में ही दुबके रहे। ठकुराइन का चीख़ना चिल्लाना सुन कर एक बार देवर तमतमा कर उठा भी पर मां ने उसे हाथ जोड़ कर रोक लिया। बोलीं, 'ऊ तो हाथी नीयर पगला गई है, कहीं गोली, वोली दाग देगी तो का होगा?' देवर अफना कर रह गया। रह गया घर में ही।

ठकुराइन थोड़ी देर तक चीखती चिल्लाती रहीं, हाथ में दोनाली बंदूक लिए लहराती रहीं। पूरा गांव इकट्ठा हो गया। अवाक देखता रहा। पर जेठ-देवर,

सास-जेठानी घर से बाहर नहीं निकलीं घूंघट काढ़ कुछ बूढ़ी अधेड़ औरतों ने ठकुराइन को किसी तरह समझा बुझा कर घर के भीतर किया कुर्ता पायजामा उतरवा कर फिर से साड़ी ब्लाउज पहनाया शील-संकोच, मान-मर्यादा जैसी कुछ हिदायतें दीं और यह हिदायतें जब ज्यादा हो गईं तो ठकुराइन बोलीं, ‘ई सब कुछ हमारे लिए ही है, उन लोगों के लिए कुछ नहीं?’ यह कह कर एक औरत के कंधे पर सिर रख कर वह फफक कर रो पड़ीं

बाहर भीड़ छटने लगी अंदर भले ठकुराइन रो पड़ी थीं पर बाहर एक बूढ़ा व्यक्ति लोगों से कह रहा था, ‘दुलहिन पर दुरगा सवार हो गई हैं’ जो भी हो अब ठकुराइन गांव में ही नहीं जवार में भी ख़बर थीं उनके कुर्ते पायजामे और बंदूक लहराने की चर्चा चहुंओर थी मिर्च-मसाले के साथ

दिन फिर धीरे-धीरे गुजरने लगे अब ठकुराइन के जेठ देवर भी उनसे घबराते और कहीं कोई मोर्चा नहीं बांधते तो भी उनके दिल का दर्द अभी बाकी था सास तो खुले आम कहती, ‘हमारे कलेजे पर लिट्टी ठोंक रही है’ जेठ, देवर भी इस मर्म को समझते फिर धीरे-धीरे ठकुराइन के ख़िलाफ व्यूह रचने में वह लग गए इस बार सीधे कुछ करने-करवाने के बजाय वाया-वाया खुराफात शुरू हुई किसी छोटी जाति के व्यक्ति को ठकुराइन के ख़िलाफ लगा देना, किसी पट्टीदार को भड़का देना आदि ठकुराइन सब समझतीं पर पहले ही की तरह फिर बड़ी ख़ामोशी से सब कुछ टाल जातीं लेकिन जब उनके हलवाहे को जेठ, देवर ने भड़काया तो वह एक बार फिर खौल गईं लेकिन अब की पति का कुरता पायजामा नहीं पहना उन्होंने न ही दोनाली बंदूक उठाई अबकी वह कुछ ठोस कार्यवाई करना चाहती थीं

लेकिन तभी उनके दुर्भाग्य ने उन्हें एक बार फिर घेर लिया

घर के आंगन में धोया हुआ गेहूं सुखवाने के लिए उन्होंने पसार रखा था बाहर का दरवाजा किसी काम से खुला पड़ा रह गया था कि तभी दो तीन बकरियां दौड़ती-उछलती घर में आ गईं आंगन में पड़ा गेहूं चबाने लगीं ठकुराइन वैसे ही खौली हुई थीं, बकरियों को गेहूं में मुंह डाले देखा तो भड़क गईं घर में रखा एक डंडा उठाया बकरियों को मारने के लिए बाकी बकरियां तो डंडा उठाते ही फुदक कर भाग गईं लेकिन एक बकरी फंस गई ठकुराइन ने सारा गुस्सा, सारा उबाल उसी बकरी पर उतार दिया डंडे का प्रहार इतना जबरदस्त था कि वह बकरी बेचारी वहीं छटपटा कर छितिरा गई कुछ ही क्षणों में उसने सांस से भी छुट्टी ली और वहीं आंगन में दम तोड़ बैठी

ठकुराइन डर गईं माथा पकड़ कर बैठ गईं पहली चिंता जीव हत्या की थी, इस अपराध बोध में इस पाप बोध में तो वह थीं ही दूसरी और कहीं बड़ी चिंता यह थी कि जाने किस की बकरी थी यह और जिस भी किसी की बकरी होगी उसे जेठ, देवर चढ़ा भड़का कर जाने क्या-क्या करवाएंगे ?

और उन का यह डर सचमुच सच साबित हुआ यह बकरी एक खटिक की थी उसने आसमान सिर पर उठा लिया ठकुराइन समझ नहीं पा रही थीं कि क्या करें वह क्योंकि वह खटिक अब छिटपुट गालियों पर भी उतर आया था वह अपने जेठ और देवर से न तो हार मानना चाहती थीं न ही उन के सामने झुकने को तैयार थीं मायके में भी बार-बार वह आंसू बहाते, शिकायत करते तंग हो गई थीं सो हार मान कर उन्होंने घर में ताला लगाया और चुपचाप शहर का रास्ता पकड़ा शहर पहुंच कर पता किया कि सबसे बड़ा वकील कौन है? फिर उस वकील के घर का पता लगा कर उसके घर पहुंचीं सुंदर थीं ही सो घर में एंट्री पाने में मुश्किल नहीं हुई, न ही वकील से मिलने में वकील के चैंबर में गईं तो कुछ लोग वहां और भी बैठे थे सो वह थोड़ा संकोच घोलती हुई बोलीं, ‘माफ कीजिए मैं जरा प्राइवेट में बात करना चाहती हूं’ सुंदर और जवान स्त्री खुद ही प्राइवेट बात करना चाहते तो भला कौन पुरुष इंकार कर पाएगा ? वकील साहब भी इंकार नहीं कर पाए वहां बैठे बाकी लोगों को यथासंभव जल्दी-जल्दी निपटाया और जब सब लोग चैंबर से बाहर निकल गए तो उन्होंने मुंशी को बुला कर बता दिया कि, ‘थोड़ी देर तक किसी को भी अंदर नहीं आने देना’ फिर ठकुराइन से वह बोले, ‘हां, बताइए मैडम!’ फिर मैडम ने बकरी वाली मुश्किल मय पट्टीदारी के लोगों द्वारा खटिक को चढ़ाने भड़काने के विस्तार से बताई और बोलीं, ‘जो भी पैसा खर्च होगा, मैं करूंगी’ फिर वह

हाथ जो□ कर विनती करती हुई बोलीं, ‘लेकिन मुझे बचा लीजि□ वकील साहब!’ फिर अपनी जगह से उठ कर वह उनके पास तक गईं और उनके पैर छूती हुई बोलीं, ‘मुझे बचा लीजि□□’ फिर जो□ा, ‘किसी भी कीमत पर□’ वकील साहब ने मौका देख कर उनकी पीठ पर हाथ फेरा, सांत्वना दी और कहा, ‘घबराइ□ नहीं बैठि□, कुछ सोचता हूं□’

फिर थो□ी देर तक वह चिंतित मुद्रा में मौन रहे□ माथे पर दो-चार बार हाथ फेरा□ कानून की दो चार किताबें अलटीं-पलटीं और लगभग परेशान हो ग□□

उन की परेशानी देख कर ठकुराइन बेकल हो गईं□ बोलीं, ‘क्या नहीं बच पाऊंगी?’

‘आप जरा शांत बैठि□□’ कह कर वकील साहब ने अपनी पेशानी पर परेशानी की कुछ और रेखा□ं ग□ीं□ फिर कुछ और कानूनी किताबें अलटीं-पलटीं□ और जब उन्हें सामने बैठी मैडम की मूर्खता भरी गंभीरता पर पूरी तरह यकीन हो गया और यह भी कि अब चूकना नहीं चाहि□□ माथे पर हाथ फेरते हु□ बोले, ‘दरअसल आपने किसी आदमी की हत्या की होती तो आसान था, बचा लेता□ क्यों कि तब सिर्फ धारा 302 ही लगती□ लेकिन आपने तो जीव हत्या कर दी है□ सो मामला डबल हो गया है और 302 की बजाय मामला दफा 604 का हो गया है□’ वकील साहब थो□ा और गंभीर हु□, ‘दिक्कत यही हो रही है तिस पर यह बकरी खटिक की है□ और आप शायद नहीं जानतीं खटिक अनुसूचित जाति में आता है□ सो □क पेंच यह भी प□ेगा□’

ठकुराइन थो□ा और घबराईं□ बोलीं, ‘लेकिन हम तो आपका ब□ा नाम सुनी हूं□ तभी आप के पास आई हूं□’ वह थो□ा और खुलीं, ‘जो भी कीमत देनी होगी मैं दूंगी□ खर्चा-बर्चा का आप फिकिर मत करि□, मैं सब करूंगी□ चाहि□ तो आप जज-वज सब सहेज लीजि□□’ वह लगभग घिघियाईं, ‘बस आप कइसो हमको बचा लीजि□□ गांव में हमारी बेइज्जती न हो, पट्टीदारों के आगे सिर न झुके□’

‘घबराइ□ नहीं□’ वकील साहब ने भरपूर सांत्वना देते हु□ कहा, ‘अब आप हमारे पास इतने विश्वास से आई हैं तो कुछ तो करना ही प□ेगा□’ वह निशाना और दुरुस्त करते हु□ बोले, ‘अब समझि□ कि अगर आप को नहीं बचा पाया तो हमारी वकालत तो बेकार हो गई□ मेरी थू-थू होगी और मैं वकालत छो□ दूंगा□’ वह बोले, ‘तो आप निश्चिंत रहि□ मैं जी जान लगा दूंगा□ आप को कुछ नहीं होगा□ उलटे उस खटिक को ही फंसवा दूंगा□ कि आखिर उसकी बकरी आप के घर में घुसी कैसे? उसकी हिम्मत कैसे हुई □क शरीफ और इज्जतदार अकेली औरत के घर में बकरी घुसाने की□’

ठकुराइन वकील साहब के इस कहे पर ब□ी आश्वस्त हुईं□ उनके चेहरे पर खुशी की कुछ रेखा□ं खिलीं□ वह बुदबुदाईं ‘आपकी ब□ी कृपा□’ फिर वकील साहब ने कुछ वाटर मार्क और वकालतनामा पर उनसे दस्तख़त करवा□□ खटिक का और उनका पूरा पता लिखा□ □क हजार रुप□ फीस के वसूले□ और बोले, ‘मैडम आप निश्चिंत हो जाइ□□ आप की इज्जत को संभालना अब हमारा काम है□’ उन्होंने □हतियात के तौर पर उनसे यह भी कह दिया, ‘आप इज्जतदार और प्रतिष्ठित औरत हैं सो आप को कचहरी, इजलास दौ□ने धूपने से भी छुट्टी दिलवा दूंगा जज साहब को दरख्वास्त दे कर□ नाहक वहां आने से बेइज्जती होगी□ आप बस यहां आ कर सीधे हमसे ही मिलती रहि□गा□’ फिर वकील साहब ने आगाह किया कि, ‘हमारे मुंशी या किसी जूनियर वकील से भी इस केस की चर्चा मत करि□गा□ भूल कर भी नहीं□ नहीं □क मुंह से दो मुंह, दो से चार, चार से चालीस मुंह बात फैलेगी□ ख़ामख़ा जगहंसाई होगी और केस में भी नुकसान हो सकता है, हो जा□□ सो ध्यान रखि□गा यह बात हमारे आप के बीच प्राइवेट ही रहे□’

ठकुराइन बिलकुल किसी आज्ञाकारी बच्चे की तरह वकील साहब की सारी बातें मान गईं□ और निश्चिंत भाव से खुशी-खुशी गांव लौट गईं□ गांव पहुंचने पर

खटिक ने फिर हल्ला दंगा किया। पर दूसरे दिन पुलिस आई और उस खटिक को पकड़ ले गई। हुआ यह था कि वकील साहब ने ठकुराइन की ओर से पुलिस में खटिक के ख़िलाफ़ एक अप्लीकेशन दे कर जान माल का ख़तरा बता दिया। और पुलिस वालों को पटा कर धारा 107 और 151 में खटिक को बंद करवा दिया। अपना ही एक जूनियर लगा कर उसे दूसरे दिन जमानत पर छुड़वा भी दिया। उसे कचहरी में अपने तख़्ते पर बुलवाया। दो सौ रुपए दिए। और अपनी बात समझाई।

खटिक गांव में वापस गया और ठकुराइन से माफी मांगने की बात कही। ठकुराइन ने उलटे उसे झाड़ दिया। बोली, 'जाओ कचहरी में नाक रगड़ो। माफी वहीं मांगो।' ठकुराइन बिलकुल वीर रस में थीं। खटिक चला गया। लेकिन कुछ दिन बाद ही खटिक फिर भाव खाने लगा। ठकुराइन भाग कर शहर गईं। वकील से मिलीं उन्होंने फिर सांत्वना दी, फीस ली। बाद के दिनों में तो जैसे यह क्रम ही बन गया। खटिक ठकुराइन से कभी गिड़गिड़ाता, कभी भाव खा जाता। ठकुराइन फिर शहर जातीं और बात ख़त्म हो जाती। लेकिन कुछ दिनों में फिर उभर जाती। क्योंकि होता यह था कि ठकुराइन के ख़िलाफ़ कोई मुकदमा तो वास्तव में था नहीं लेकिन खटिक के ख़िलाफ़ 107 व 151 का मुकदमा तो था ही। सो वह पेशी पर शहर जाता, वकील से मिलता, सौ पचास रुपए लेता और वकील के कहे मुताबिक गांव में 'ऐक्ट' करता। कभी कहता कि, 'अब कि तो मैं फंस गया। लगता है मुकदमा हमारे उलटा जाएगा।' तो कभी कहता, 'अब तो ठकुराइन बच नहीं पाएंगी। सजा इन्हीं को होगी।' क्योंकि वकील साहब के यहां से ऐसा ही कुछ कहने का निर्देश होता। जब जैसा निर्देश होता खटिक वैसा ही गांव में आ कर ऐक्ट करता। ठकुराइन के जेठ, देवर, सास भी मामले की तह में गए बिना ठकुराइन की दुर्दशा का आनंद लेते।

ठकुराइन का अब शहर जाना भी बढ़ने लगा था। वकील साहब उनसे फीस तो ले ही रहे थे। डोरे भी डाल रहे थे। ठकुराइन को यह सब ठीक नहीं लगता। लेकिन गांव में उनकी इज्जत वकील साहब बचाए हुए थे सो वह इसे अनचाहे ही सही शुरू-शुरू में बर्दाश्त करती रहीं। लेकिन बाद में उन्हें भी यह सब ठीक लगने लगा। वकील साहब की पुरुष गंध में भी वह बहकने लगीं। शुरू-शुरू में तो वकील साहब के चैम्बर में ही प्राइवेट बातचीत के दौरान नैन मटक्का करतीं, उनके घर में ही ठहरतीं। लेकिन बाद में वकील साहब के ही घर में महाभारत मचने लगी। वो कहते हैं न कि लहसुन का खाना और पर नारी की सोहबत छुपाए नहीं छुपती सो बात धीरे-धीरे खुलने लगी थी। क्योंकि ठकुराइन पहले तो सिर्फ़ मुवक्किल थीं, बाद में ख़ास मुवक्किल बनीं और फिर अचानक एकदम ख़ास बन गई वकील साहब की। हालांकि देह की सांकल ठकुराइन ने वकील साहब के लिए नहीं खोली थी पर आंखों से होते हुए मन की सांकल तक तो वकील साहब आ ही गए थे, यह बात ठकुराइन भी जान गई थीं। वकील साहब के साथ सिनेमा-विनेमा, चाट, पकौड़ी भी वह करने लगी थीं। लेकिन बाद में वकील साहब के घर में झंझट जब ज्यादा शुरू हो गई तो वकील साहब उन्हें एक होटल में ठहराने लगे। कभी-कभार होटल पहुंच कर हाल चाल भी वह ले लेते। लेकिन जल्दी ही मुख्य हाल चाल पर आ गए और ठकुराइन की मीठी-मीठी ना नुकुर के बावजूद उन्होंने उनकी देहबंध को आख़िर लांघ लिया। अब कई बार वकील साहब होटल में ही ठकुराइन के साथ दिन रंगीन कर लेते। लेकिन होटल में कई बार असुविधा होती सो उन्होंने ठकुराइन को शहर में ही घर ख़रीदने की राय दी। ठकुराइन ने घर ख़रीदा तो नहीं पर एक इंडपिंडेंट घर किराए पर ले लिया। यह कह कर कि बाद में ख़रीद भी लूंगी। बाद में उन्होंने आवास विकास परिषद का एक एम.आई.जी. मकान ख़रीदा भी। इस बीच दो तीन बार एबॉर्शन की भी दिक्कत उठानी पड़ी ठकुराइन को। अंततः वकील साहब ने एक प्राइवेट डाक्टर से उन्हें कापर टी लगवा दिया। अब कोई दिक्कत नहीं थी। वकील साहब गांव में ठकुराइन की इज्जत बचाने की फीस धन और देह दोनों में वसूल रहे थे। सिलसिला चलता रहा। खटिक का 107 और 151 का मुकदमा कब का ख़त्म हो गया था लेकिन ठकुराइन के ख़िलाफ़ दफा 604 का मुकदमा ख़त्म नहीं हो रहा था।

लेकिन ठकुराइन को इसकी फिकर नहीं थी।

वह तो आकंठ वकील साहब को जी रही थीं। हां, वकील साहब उन्हें जरूर नहीं जी रहे थे, वह तो भोग रहे थे। कभी-कभी किसी बात पर दोनों के बीच खटपट भी होती। लेकिन कुछ ही दिनों की तनातनी के बाद वकील साहब उन्हें 'मना' लेते। हालांकि तनातनी के दिनों ठकुराइन गांव चली जातीं। खेती बारी बटाई पर दे रखी थी। हिस्से में जो अनाज मिलता उसको बेच बाच कर खर्च चलातीं। कुछ भविष्य के लिए बैंक में भी जमा करती रहतीं। धीरे-धीरे समय बीतता गया। ठकुराइन भले देह सुख में डूब कुछ देखती सुनती नहीं थीं। पर लोग सब कुछ देख सुन रहे थे। गांव में जिस इज्जत बचाने के फेर में वह इस फांस में फंसी थीं वहां भी लोग दबी जबान और छुपे कान से ही सही जान चले थे कि जेठ, देवर को धूल चटाने वाली ठकुराइन शहर में एक वकील की रखैल बन गई हैं। बात ठकुराइन के मायके तक भी पहुंची। उनके भाई ने एकाध बार ऐतराज भी जताया पर बाद के दिनों में वह सिंगापुर चला गया कमाने। पति का

Written by दयानंद पांडेय
Wednesday, 09 March 2011 02:25

नधिन हो गया□ देवर, जेठ को वह मक्खी-मच्छर बराबर भी नहीं समझती थीं□ गांव में ज्यादातर रहती नहीं थीं कि ताना सुनें□ दूसरे, घर में कामधाम करने वाले, देखभाल करने वालों को पैसा, अनाज की मदद दे कर इतना उपकृत कि□ रहतीं कि वह होठ खोलना तो दूर डट कर आंख मूंद जाते□ और जो कोई ठकुराइन की अनुपस्थति में कभी कभार इन आदमियों से चर्चा चलाता भी तो ये सब तरेर देते□ कहते, 'ठकुराइन मलकनि पर अइसन लांछन की बात हमारे सामने करना भर मत□ नहीं, जीभ खींच लूंगा□'

लोग प्रतविाद करते, 'तो शहर में रहती कहें है?'

'इहां के नरक से ऊब कर□' आदमी जो□ते, 'फरि यहां मलकनि को सुवधिा भी कहां है ? शहर में ब□ी सुवधिा है□ स□क है, बजिली है, दुकान है, सनीमा है□ और □हले ब□ी बात वहां फ्टीचर नहीं है□ इहां की तरह छोटी-टुच्ची बात करने के लि□□'

'हां भई, जसिका खाओ, उसका बजाना भी प□ता है□' कह कर लोग बात ख़त्म कर देते□

लेकनि बात ख़त्म कहां होती थी भला?

दनि गुजश्रते ग□□ अब ठकुराइन के चेहरे से लावण्य छुट्टी लेने लगा था□ वधिवा जीवन का फ्रस्ट्रेशन और अनैतकि जीवन जीने का तनाव उनके चेहरे पर साफ दीखने लगा था□ हालां कि शहर में वह प□ोसयिों से कोई ख़ास संपर्क नहीं रखती थीं और पूरी शष्टिता, भद्रता के साथ सरि पर सलीके से पल्लू रख कर ही घर से बाहर नक्लिती थीं तो भी त□ने वाली आंखें त□ लेती थीं□ हालां कि घर में काम करने के लि□ □क बूढ़ी औरत और □क छोटा ल□का भी वह अपने मायके से लाई थीं□ तो भी अकेली औरत के पास जब तब □क पुरुष आता जाता रहे तो कोई सवाल न भी उठा□ फरि भी सुलग जाता है□ फरि उनकी अकेली औरत का ठप्पा! लोग कहते बनि पतवार की नाव है जो चाहे, जधिर चाहे बहा ले जा□□ पर अब दक्वित्त यह थी कि ब□ती उम्र के साथ-साथ उनका अकेलापन अब उन्हें सालने लगा था□ इस अकेलेपन से ऊब कर दो □क बार वकील साहब से दबी जबान शादी कर लेने को भी उन्होंने कहा□ पर वकील साहब टाल ग□□ उनकी दलील थी कि, वह बाल बच्चेदार हैं, शहर में उनकी हैसयित और रुतबा है सो लोग क्या कहेंगे? दूसरी दलील उम्र के गैप की थी, तीसरी दलील उनकी यह थी कि आप क्षत्रयि जाति की हैं और मै कुर्मी□ इस पर भी समाज में ववािद खड़ा हो सकता है□ इसलि□ यह संबंध जैसे चल रहा है वैसे ही चलने दें□ इसी में हम दोनों की भलाई है और समाज की भी□ ठकुराइन जबान पर तो लगाम लगा गईं पर मन ही मन कसमसाने भी लगीं□ उन्होंने सोचा कि अब वकील साहब से पूरी तरह कनिारा कर लें□ पर वह यह सब अभी सोच ही रही थीं कि उन्होंने पाया कि अब वकील साहब खुद ही उनसे कनिारा करने लगे हैं□ अब उनका उन के घर में आना जाना भी कम से कम हो गया था□ वह सब कुछ छो□ कर अब गांव वापस जा कर रहने की सोचने लगी थीं□ लेकनि उन का दफ 604 वाला बकरी की हत्या वाला केस भी फंसा प□ा था□ लेकनि उन्होंने गौर कयिा कि अब वकील साहब उनके केस पर भी बहुत ज्यादा ध्यान नहीं दे रहे थे□ न उन पर, न उन के केस पर□

ठकुराइन की चतिाओं का अब कोई पार नहीं था□

बाद में उन्होंने जब इसकी तह में जा कर पता लगाया तो □क बात तो साफ हो गई कि □क ल□की वकील साहब की जूनयिर बन कर आ गई थी, वकील साहब की दलिचस्पी अब उस जूनयिर वकील में ब□ गई थी□ यह तो वह समझीं□ पर उनके केस में वह क्यों दलिचस्पी नहीं ले रहे हैं यह वह समझ नहीं पा रही

Written by दयानंद पांडेय
Wednesday, 09 March 2011 02:25

थीं। उन्होंने सोचा कि किसी दूसरे वकील से इस बारे में दरयाफ़्त करें लेकिन उन्हें याद आई वकील साहब की हिदायत कि, 'किसी भी से जिक्र नहीं करिएगा वरना केस बिगड़ जाएगा।'

सो वह चुप लगा गईं।

लेकिन कब तक चुप लगातीं भला? वकील साहब के चैंबर में उनका आना जाना बढ़ गया। वकीलाइन भी अब उनको देख कर नाराज नहीं होती थीं न ही कुढ़ती थीं। अब तो उनको कुढ़ने के लिए वह जूनियर वकील मिल गई थी। अब वकील साहब चैम्बर में प्राइवेट में उस जूनियर वकील से मिलते। इस फेर में कई बार ठकुराइन को भी बाहर बैठना पड़ जाता। उनको यह सब बहुत बुरा लगता लेकिन मन मसोस कर रह जातीं।

अब जब वह चैम्बर के बाहर बैठतीं तो चाहे अनचाहे किसी न किसी से बातचीत भी शुरू हो जाती। इस तरह आते जाते लोगों से परिचय भी बढ़ने लगा। हालांकि विधवा होने के नाते वह सादी साड़ी पहनतीं। मेकअप भी नहीं करतीं। वह सिर पर पल्लू रख कर बड़े अदब से, सलीके और शऊर से बतियातीं, गंभीर भी रहतीं, आंखों में शील संकोच सहेजे ज्यादा किसी से हंसती मुसकुराती नहीं थीं तो भी अब पहले की तरह सबको वह अनदेखा भी नहीं करतीं। पहले अपनी सुंदरता और जवानी का गुरूर भी था। सो सबको अनदेखा करते चलतीं। पर अब सुंदरता का वह गुरूर भी उतार पर था। वह चालीस की उम्र छू रहीं थीं तो भी जब वह रिक्शे से या पैदल जैसे भी चलतीं लोग मुड़-मुड़ कर उन्हें देखते जरूर। तो उन्हें लगता कि अभी जवानी बाकी है। अभी भी उन की देहयष्टि में दम है। उन्हें अपने पर गुरूर आ जाता।

इसी गुरूर में वह एक रोज एक सड़क पर खड़ी रिक्शा ढूंढ़ रही थीं। कि तभी वकील साहब का एक पुराना जूनियर वकील मोटर साइकिल से उधर से ही गुजरा। ठकुराइन को देख कर ठिठका, नमस्कार किया। रुका और हाल चाल पूछा। कहा कि, 'जहां जाना हो चलिए। मैं पहुंचा देता हूं।' पर ठकुराइन ने बड़ी शालीनता से पल्लू ठीक करती हुई इंकार कर दिया। बोलीं, 'जी बहुत मेहरबानी पर मैं रिक्शे से चली जाऊंगी। आप काहें तकलीफ करेंगे?' कह कर वह वकील को टाल गईं। पर वकील गया नहीं रुका रहा। बोला, 'अच्छा रिक्शा मिलने तक तो आप का साथ दे सकता हूं।'

'हां, हां क्यों नहीं?' हलका सा मुसकुरा कर ठकुराइन बोलीं। वकील इधर-उधर की बात करते हुए अनायास ही उनके केस के बारे में बात करने लगा। पूछते-पूछते जिरह करने लगा। हालांकि ठकुराइन उसकी हर जिरह टालती रहीं। पर जूनियर वकील जैसे ढिठाई पर उतर आया, 'आख़िर कैसा केस है आपका जो इतने बरसों से ख़त्म नहीं हो रहा है। एक्के कोर्ट में अटका पड़ा है।'

ठकुराइन फिर भी चुप रहीं।

'अब तक तो केस हाई कोर्ट में पहुंच जाता है अपील में इतने सालों में और आपका केस अभी डिस्ट्रिक्ट जज के पास भी नहीं पहुंचा ? आख़िर है क्या?'

'आप नहीं जानेंगे वकील साहब! बहुत बड़ा मामला है। वह तो वर्मा जी वकील साहब हैं कि बचाए हुए हैं नहीं तो हम तो फंस ही गई थीं।'

‘लेकिन केस है क्या?’ वह जूनियर वकील बोला, ‘आपकी कोई फाइल भी नहीं है चैम्बर में कि हम लोग देखते□’

‘केस ब□ा है इस लि□ वकील साहब खुद देखते हैं□’

‘अरे तब भी फाइल कभी तो कोर्ट जा□गी-आ□गी□ तारीख़ लगेगी□’ वह माथे का पसीना पोंछते हु□ बोला, ‘आख़िर केस है क्या ?’

‘दफा 604 का□’ ठकुराइन आहिस्ता से बोल प□ीं□

‘दफा 604 ?’ वकील भ□का, ‘यही बताया न आपने कि दफा 604!’

‘जी□’ ठकुराइन ऐसे बोलीं जैसे यह बता कर कोई पाप कर बैठी हों□ बोलीं, ‘जाने दीजि□□ आप जाइ□□’

‘हम तो चले जाते हैं मैडम पर दस बारह साल से हम भी इस कचहरी में प्रैक्टिस कर रहे हैं□ थाना, □स.पी. भी देख रहे हैं□ और आई.पी.सी. भी□ तो भारतीय कानून में ऐसी कोई दफा तो है नहीं अभी तक□ वह जूनियर वकील बोला, ‘बल्कि आई.पी.सी. में जो अंतिम दफा है वह है दफा 511 बस ! तो 604 कहां से आ जा□गी?’

‘लेकिन वर्मा जी तो हम को यही बता□ थे कि दफा 604 हो गया□’’ ठकुराइन हकबकाती हुई बोलीं□

‘हो सकता है आप के सुनने में गलती हो गई हो□’ जूनियर वकील बोला, ‘□ैर, छो□ि□ मामला क्या था ? हुआ क्या था आप से?’

‘मतलब?’ असमंजस में प□ती हुई ठकुराइन बोलीं□

‘मतलब यह कि आप से अपराध क्या हुआ था?’

‘बक्री मर गई थी हमारे मारने से□ □कखटकिकी थी□’

‘ओ हो!’ ताली बजाते हु□ जूनयिर वकील बोला, ‘मुलेसर खटकिकी तो नहीं?’

‘हां, लेकनि आप कैसे जानते हैं?’ ठकुराइन फरि अफनाईं□

‘जानता हूं? अरे पूरी कुंडली जानता हूं□’

‘कैसे?’

‘क्चहरी में तख्ते पर बराबर आता है□’ वह बोला, ‘‘मैडम माफकीजि□ वर्मा साहब ने आप को डंस लयिा□’

‘क क्ह रहे हैं आप?’

‘बताइ□ चैंबर में आपसे फीस लेते हैं तख्ते पर उस मुलेसर खटकिको फीस देते हैं तो क मुफ्त में? वह बोला, ‘फरि आप भी मैडम इतनी भोली हैं? घर में आगा पीछा कोई नहीं है क?’

‘काहें नाहीं सब कोई है□’

‘तो फरि कोई ये नहीं बताया कबिक्री मारना कोई अपराध नहीं□’

‘पर खटकिकी थी□’ वह बोलीं, ‘ऐसा ही वकील साहब बोले थे□’

‘अरे लाखों बकरियां देश में हर घंटे कटती हैं□ खटकिकी हो या जुलाहा की□ कोई दफा किसी पर लगती है क्या ?’ वह बोला, ‘चलि□ गलती से किसी का नुकसान हो गया तो उसको उसका खर्चा-मुआवजा और अधिकसे अधिकबकरी का दाम दे दीजि□ □ ई का कि फर्जी दफा 604 जो कहीं हइयै नहीं है, उसको सालों साल वकील केचैंबर में ल□ ि□ □’ वह बोला, ‘आप तो मैडम फंस गई?’

‘का बोल रहे हैं आप□ सही-सही बोलि□ □’ ठकुराइन जैसे अधमरी हो गईं□ बोलीं, ‘‘वकील साहब तो बोले थे कि आदमी मारते हैं तो दफा 302 लगता है, आदमी की बकरी मार दि□ तो डबल दफा लगती है दफा 604 और हमको अब तकबचा□ भी हैं वो□’

‘आप ब□ी भोली हैं मैडम□ आप को बचा□ नहीं बेचे हैं□ आप को बरगला□ हैं ऊ कानून केबाजार में□ जो दफा कहीं भारतीय कानून में है ही नहीं□’ वह बोला, ‘हम पर विश्वास न हो तो आइ□ कचहरी किसी वकील, किसी जज से दरयाफ्त कर लीजि□!’

‘अब हम का बता□ं, कहां आ□ं ?’ बोल कर ठकुराइन फफक कर रो प□ीं□ रोते-रोते वहीं स□कपर सिर पक□ कर बैठ गईं□

‘आप को हम पर यकीन न हो तो चैंबर में आ कर वर्मा साहब से ही पूछ लीजि□ कि यह दफा 604 आई.पी.सी. में कहां है? और कि आपका केस किस कोर्ट में चल रहा है? सब कुछ दूध का दूध पानी का पानी हो जा□गा□’ जूनियर वकील बोला, ‘बस भगवान केलि□ हमारा नाम मत बोलि□गा□ मत बताइ□गा कि हमने ई सब बताया है□’ वह बोला, ‘हां, जो हम झूठ साबित हो जा□ं तो वहीं हमको अपने इस सैंडिल से मारि□गा, हम कुछ नहीं बोलूंगा□’ कह कर वह चलने लगा□ बोला, ‘मैडम माफकीजि□ आप केसाथ ब□ा भारी अन्याय कर दिया वर्मा साहब ने□’ पर ठकुराइन कुछ नहीं बोलीं□ उनकेमुंह में शब्द ही नहीं रह गया था□ लोग आसमान से जमीन पर ऐसे में आ जाते हैं पर उनको लगता था कि वह आसमान से सीधे पाताल में जा कर डूब गई हैं□ उनको गुमसुम देख कर वह वकील बोला, ‘हमारे साथ तो आप मोटर साइकिल पर बैठेंगी नहीं□ रुकि□ मैं आप केलि□ रिक्शा बुलाता हूं□’ कह कर वह □करिक्शा बुला कर लाया□ ठकुराइन स□कपर से उठीं, धूल झा□ती हुई रिक्शे पर बैठीं□ उन्होंने गौर किया कि कलिफलगी उनकी क्रीम कलर की सा□ी जगह-जगह काली प□ गई थी, स□कपर बैठ जाने से□ उस वकील ने जाते-जाते उन्हें फिर नमस्कार किया□ बोल कर, ‘मैडम नमस्कार!’ पर मैडम केमुंह से शब्द गायब थे□ वह भौचकथीं□ उन्होंने धीरे से दोनों हाथ जो□ दि□□

‘वर्मा जी ने इतना ब□ा धोखा दिया□’ रिक्शा जब चलने लगा तो वह अपने आप से ही बुदबुदाईं□ वह निकली थीं बाजार जाने को पर वापस घर आ गईं□ बु□िया महरी से पानी मांगा, पानी पी कर लेट गईं□ दो दिन तकवह घर में ही प□ी रहीं□ बेसुध!

तीसरे दिन उन्होंने अपने पति का वह पुराना कुर्ता पायजामा फिर से ढूंढा□ मिला तो वह जगह-जगह से कट पिट गया था□ गईं बाजार, □कनया कुर्ता पायजामा और अंगोछा ख़रीदा□ घर आईं पहना□ अंगोछा गले में लपेटा, दोनाली बंदूकउठाई और रिक्शा ले कर पहुंच गईं सीधे वर्मा वकील केचैंबर पर□ वह ध□ध□ाती हुई घुसीं□ मुंशी ने उन का वेश देख कर उन्हें रोका भी कि, ‘साहब प्राइवेट बात कर रहे हैं□’ पर वह मानी नहीं बिन कुछ बोले चैंबर में घुस गईं□ जब वह चैंबर में घुसीं तो सोफेपर बैठे वर्मा वकील की गोद में उनकी जूनियर वकील बाल खोले लेटी प□ी थी और वह उसकेस्तनों, कपोलों से खेल रहे थे□ ठकुराइन को □कबारगी देख कर पहले तो वह पहचान भी नहीं पा□ □ दूर छिटककर ह□ब□ाते हु□ बोले, ‘कौन-कौन?’

‘दफा 604 हूं□ पहचाने नहीं?’ ठकुराइन बिलबिलाईं□

Written by दयानंद पांडेय
Wednesday, 09 March 2011 02:25

‘अरे मैडम आप?’ ठकुराइन के हाथों में बंदूक देख कर घबरा वकील साहब की हलक सूख गई सूखे गले से बोले, ‘बैठि-बैठि! बैठि तो पहले’

‘बैठने नहीं आई हूं दफा 604 क्या होता है, कहां होता है जानने आई हूं’ वह घुकर बोलीं

‘बैठि तो’ वकील साहब बोले, ‘शरीफ इज्जतदार महिला हैं आप बैठि तो’

‘शरीफ और इज्जतदार ? मैं हूं ?’ वह बोलीं, ‘यह आप बोल रहे हैं?’

‘अरे बैठि तो!’ वह बोले तब तक जूनियर वकील लकी अपने कप लत्ते ठीक-ठाक कर धीरे से सरक कर चैंबर से बाहर निकल गई फिर चैंबर में मुंशी और जूनियर वकील भी आ पहुंचे शोरगुल सुन कर घर के लोग भी आ ग वकिलाइन भी ठकुराइन का यह नया रूप देख कर वह भी ठक हो गईं बी मुश्किल से घर की औरतों और मुंशी ने मिल कर ठकुराइन को काबू किया पर ठकुराइन लगातार दफा 604 की किताब मांगती रहीं, किस कोर्ट में उनका केस चल रहा है उस कोर्ट और जज का नाम पूछती रहीं पर ठकुराइन के किसी भी सवाल का जवाब वकील साहब के पास नहीं था वह कहने लगे, ‘मैडम इस समय आप अशांत हैं जाइ घर पर आराम कीजि शांत हो कर आइगा तब बात करेंगे’

‘अच्छा छोि’ ठकुराइन वकिलाइन को खींचती हुई बोलीं, ‘आप ही इनसे पूछि और जरा शांति से पूछि कि बकरी मारने का जुर्म क्या होता है दफा 604? और नहीं तो फिर क्या होता है’

‘हम कानून नहीं जानतीं’ वकिलाइन डरी सहमी बोलीं

‘अच्छा झूठे ही बहला फुसला कर किसी शरीफ औरत को रंडी बना दिया जा, रखैल बना लिया जा, इस अपराध का क्या कानून होता है यह तो जानती होंगी?’ ठकुराइन सिसकते हु दहाीं पर वकिलाइन सब कुछ समझते हु भी चुप रहीं

‘मैं हूं इस वर्मा वकील की रखैल!’ ठकुराइन बोलीं, ‘दफा 604 की मुजरिम जो इस वर्मा ने बनाया और मुझे इस दफा से बचाते-बचाते मुझ बेवा औरत को रंडी बना दिया, रखैल बना लिया मेरे ही खर्चे पर और अपनी फीस भी लेता रहा दफा 604 से बचाने के लि’ वह बिफरीं, ‘बताइ इतने सालों तक यह दोखी मुझे लूटता रहा मैं क्या करूं? हे भगवान’ कह कर वह फफक कर रो पीं फिर बंदूक उठाई ट्रिगर दबाया वर्मा वकील को निशाना बना कर सब लोग मारे डर के क तरफ हो ग पर गोली नहीं चली इस अफरा तफरी में किसी ने धीरे से गोलियां बंदूक से निकाल दी थीं ठकुराइन हैरान थीं गोली निकल गई है वह फौरन समझ गईं उन्होंने आव देखा न ताव बंदूक पलटी और उसकी बट से ही वर्मा वकील पर धाध प्रहार कि उस बकरी से भी ज्यादा प्रेशर का प्रहार! वर्मा जी का सिर फूट गया और मुंह भी दौ कर लोगों ने ठकुराइन को पक वकील साहब को बचा कर चैंबर से बाहर ले

Written by दयानंद पांडेय
Wednesday, 09 March 2011 02:25

ग□□ ठकुराइन को समझाया बुझाया□ उन्हें उनके घर भेजा□ और वकील साहब को अस्पताल□

डाक्टरों ने बताया कि वकील साहब को हेड इंजरी हो गई है और वह कोमा में चल ग□ हैं□ अब वकीलाइन दहा□ मार कर रो प□ीं□ डाक्टरों ने उन्हें सांत्वना दी□ दो दिन बाद वकील साहब होश में आ ग□□

पर उधर पता चला कि ठकुराइन पागल हो गई हैं वह काला कोट पहने गले में फीता बांधे देख किसी को भी देखतीं, पत्थर, डंडा जो भी मिलता चला देतीं□ दस पंद्रह वकील इस तरह घायल हो चुके थे□ यह भी पता चला कि यह पता चलते ही ठकुराइन के जेठ, देवर फौरन शहर आ ग□□ उन्हें मानसिक चिकित्सालय में भरती करा दिया□ और उनके इलाज पर तो उतना ध्यान नहीं दिया जितना इस बात पर कि वह लोग उनकी जायदाद के वारिस हैं□ और ठकुराइन के जेठ, देवर के इस कानूनी दांव पेंच में भी ठकुराइन के ख़िलाफ़ ख□ हु□ यही वर्मा वकील□

बाद के दिनों में पागलपन के बिना पर ठकुराइन की जमीन जायदाद उनके जेठ, देवर ने अपने नाम करवा ली□ और ठकुराइन फिरि पागलखाने से बाहर आ गईं□ कभी कुर्ता-पायजामा तो कभी पैंट कमीज पहने वह शहर की स□कों पर नजर आतीं जिसि तिसि वकील को पत्थर ईंटें मारती हुई□ लोग उन्हें देखते ही कहते, 'भागो भइया दफा 604 आ गई□' और वह भी ईंटें, पत्थर किसी पर भी चलाती हुई चिल्लातीं, 'लो दफा 604 हो गया!'

और अब इन्हीं वर्मा वकील का बेटा अनूप लोकक्वि के वीडियो अलबम बनाने का झांसा दे कर उन्हें फंसा रहा था□ और फिलहाल मोबाइल फोन ख़रीदने की जुगत उन्हें बता रहा था□ चेयरमैन साहब ने लोकक्वि के आगाह भी किया कि, 'जैसे बाप ने दफा 302 को डबल कर 604 में तब्दील कर उस ठकुराइन को पागल बना दिया वैसे ही उस चार सौ बीस वकील का यह बेटा भी उसका डबल यानी आठ सौ चालीस है तुम्हें खा जा□गा!' लेकिन चेयरमैन साहब की हर अच्छी बुरी बात मान लेने वाले लोकक्वि ने उन की इस बात पर जाने क्यों कान नहीं दिया□

अनूप ने अंतत□ लोकक्वि के ऊषा का □क सेलुलर फोन ख़रीदवा दिया□ सिम कार्ड डलवा कर लोकक्वि सेलुलर फोन ऐसे इस्तेमाल करते गोया हाथ में फोन नहीं रिवाल्वर हो□ बात भी वह बहुत संक्षिप्त करते और बात कई बार पूरी भी नहीं हो पाती तो भी वह खट से काट देते□ लेकिन □क बार बंबई में कोई प्रोग्राम करने के बाद लोकक्वि वापस आ रहे थे तो उन का यह सेलुलर फोन गायब हो गया□ लोग पूछते भी कि, 'कैसे गायब हो गया?' तो लोकक्वि बताते, 'पी के टुन्न हो गया था, ट्रेन में कोनो मार लिया□'

'कौन मार लिया?' सवाल का जवाब अमूमन लोकक्वि टाल जाते□ लेकिन ग्रुप के अधिकतर कलाकारों का मानना था कि मोबाइल अनूप ने ही चुराया□ दिक्क़त यह थी कि लोकक्वि का इस बार सिर्फ मोबाइल ही नहीं दस हजार रुपया भी साथ ही गायब हुआ□ लेकिन रुप□ के ली□ लोग अनूप का नहीं मीनू का नाम बताते□

जो भी हो लोकक्वि ने न तो अनूप से कुछ कहा न ही मीनू से□ अनूप से तो उन्हें उतनी तक्लीफ नहीं हुई जितनी कि मीनू से हुई□ मीनू जिसके ली□ उन्होंने क्या कुछ नहीं किया था? दो कमरे का छोटा ही सही □ल.डी.□. का □क मकान ख़रीद कर न सिर्फ दिया था बल्कि उसकी पूरी गिरिस्ती बसाई थी□ प्रोग्रामों के पेर में हांलैंड, इंगलैंड, बैंकाक, अमरीका, मारीशस, सूरीनाम जैसे कई देश घुमाया□ मर्द ने छो□ दिया तो उसको पूरा आसरा दिया□ और तो और □क बार न जाने किसका गर्भ पेट में उसके आ गया तो उसने जाने कहां गुप चुप □बॉर्शन करवाया जो ठीक से हुआ नहीं और भ्रूण पूरी तरह नष्ट नहीं हुआ, कोई

का बच्चेदानी में ही रह गया। उसकी जान सांसत में फंस गई। लगा कि बच नहीं पाएगी। ऐसे में भी लोककवि ने दिल्ली ले जा कर उसका इलाज एक एक्सपर्ट डाक्टर से करवाया तब कहीं जा कर वह बची थी। लोककवि ने पानी की तरह पैसा बहा कर उसकी जान बचाई थी, लगभग उसे नया जीवन दिया था। इस तरह जिसे जीवन दिया, आसरा दिया, अपने ग्रुप में स्टार कलाकार की हैसियत दी, कई विदेश यात्राएं कराईं। वह मीनू धोखे से उनका रुपया चुरा ले? वह मीनू जिसे वह अपना मन भी देते थे। वह मीनू? तकलीफ उन्हें बहुत हुई पर मन ही मन पी गए। वह सारी तकलीफें किसी से कुछ कहा नहीं। कहते भी तो क्या कहते? चुप ही रहे। लेकिन मन ही मन टीसते रहे।

उन्होंने अब नया मोबाइल फोन ख़रीद लिया था। चोरी न जाए इस लिए चौकन्ना बहुत हो गए थे। लेकिन जल्दी ही यह नया मोबाइल भी उनके कैंप रेजीडेंस से ही एक रात गायब हो गया। फिर उन्होंने तीसरा मोबाइल फोन ख़रीदा। लेकिन सेकेंड हैंड। अनूप ने ही ख़रीदवाया। लोककवि जानते थे कि यह भी चोरी हो जाएगा। फिर भी ख़रीदा। हालांकि मोबाइल फोन की बहुत उपयोगिता उनके पास थी नहीं। क्योंकि ज्यादातर वह कार्यक्रमों में व्यस्त रहते जहां वह मोबाइल सुन नहीं पाते। डिस्टर्ब होते वह फोन से। ध्यान टूट जाता। दूसरे, संगीत के शोर में ठीक से सुनाई नहीं देता। और जब कार्यक्रम नहीं होता तब वह अमूमन अपने कैंप रेजीडेंस पर ही होते और यहां उनके पास टेलीफोन था ही। तो भी स्टेटस सिंबल मान कर वह मोबाइल फोन रखते। सोचते कि अगर लोग उनके हाथ में मोबाइल फोन नहीं देखेंगे तो मान लेंगे कि आमदनी कम हो गई है, मार्केट ठंडा पड़ गई है इसलिए मोबाइल फोन बिक गया। हैसियत नहीं रही। अमूमन जमीनी हकीक़त पर रहने वाले और जिंदगी की हकीक़त को अपने गानों में ढालने वाले लोककवि दिखावे की नाक मेनटेन करने लगे थे। यह उन को खुद भी बुरा लगता था, लेकिन फिलहाल तो वह फंस गए थे। हालांकि उन्होंने यह भी ऐलान कर दिया था कि, ‘अबकी जो मोबाइल चोरी हुआ तो फेर नहीं ख़रीदूंगा!’ फिर वह जैसे खुद को तसल्ली देते, ‘फिर ई सेकेंड हैंड मोबाइल कोई चोरी करेगा क्या?’ लेकिन यह भ्रम भी उनका टूटा और जल्दी ही टूटा। यह सेकेंड हैंड मोबाइल भी चोरी हो गया।

लेकिन अपने ऐलान के मुताबिक उन्होंने फिर चौथा मोबाइल नहीं ख़रीदा।

फिर भी वह परेशान थे चोरियों से। अब उनके यहां तरह-तरह की चोरियां होने लगी थीं। इस कैंप रेजीडेंस में उनका जांघिया अंगोछा तक सुरक्षित नहीं रह गया था। कई-कई जोड़ वह रखते जांघिया, अंगोछे के फिर भी कई बार उन के लिए जांघिया अंगोछे का अकाल पड़ जाता। एक बार एक लड़की को उन्होंने पकड़ा भी रंगे हाथ तो वह बोली, ‘मासिक आ गया है गुरु जी, बांधना है!’ तो वह डपटे भी, ‘तो हमारा ही जांघिया, अंगोछा बांधोगी?’ वह बोली, ‘आख़िर का बांधें गुरु जी, कुर्ता पायजामा तो आपका बांध नहीं सकती!’ लोककवि यह सुन कर निरुत्तर हो गए। उसे पैसे देते हुए बोले, ‘केयर फ्री टाइप कुछ मंगवा लो। वही बांधो!’

तो भी वह आए दिन की चोरियों से परेशान हो गए थे। पैसा, कुरता, पायजामा कुछ भी नहीं बचता। बिस्तर की चद्दर तक गायब होने लगी थी। वह कहते भी कि, ‘असल में ई लड़कियां गरीब परिवार से आती हैं तो अपने बाप भाई के लिए अंगोछा, जांघिया उठा ले जाती हैं, बिस्तर की चद्दर भी ले जाती हैं। पइसा कौड़ी भी ले जाती हैं तो चलिए बरदाश्त कर लेता हूं। पर इसका का करूं कि सम्मान में मिली शाल भी मंचवे पर से गायब हो जाती है!’ वह बिफरते, ‘बताइए सम्मान की शाल भोंसड़ी की सब चुरा लेती हैं! यही बात खटकती है।’ वह जैसे जोड़ते, ‘गरीबी का मतलब ई थोड़े है कि जिससे रोजी रोटी मिले उसी के घर चोरी करो!’ वह बोलते, ‘ई तो पाप है पाप। अरे, हम भी गरीबी देखा हूं, भयंकर गरीबी। चूहा मार के खाते थे, बाकिर चोरी नहीं किया कभी।’ वह कहते, ‘आज भी जब कभी हवाई जहाज पर चढ़ता हूं उड़ते हुए नीचे देखता हूं तो रोता हूं। काहें से कि अपनी गरीबी याद आ जाती है। पर हम कब्बो चोरी नहीं किए!’

लेकिन लोककवि चाहे जो कहें उनके यहां चोरी चौतरफा चालू थी। और अब तो उनके कुछ शिष्य कलाकार जो अलग ग्रुप बना लिए थे, लोककवि के ही गाना गाते थे और गाने के आख़िर में तखल्लुस के तौर पर जहां लोककवि का नाम आता था वहां से लोककवि का नाम हटा कर अपना नाम जोड़ कर गा देते थे। पहले भी कुछ शिष्य ऐसा करते थे पर कभी कभार और चोरी छुपे। पर अब तो अक्सर और खुल्लमखुल्ला। लोककवि से इस बात की कोई शिकायत करता

तो वह दुखी तो होते पर कहते, ‘जाने दीजि सब कइसो कमा खा रहे हैं, जीने खाने दीजि!’ पर जब कोई फिर भी प्रतिवाद करता तो वह कहते, ‘हमारे गाने में कोई अपना नाम खोंस लेता है तो गाना तो उसका नहीं न हो जाता है ? ह गाना का कैसेट है बाजशर में हमारे नाम से लोग जानते सुनते हैं गानों को हमारे नाम से’

‘तो भी!’ कहने वाला फिर भी प्रतिवाद करता

‘तो भी?’ कह कर वह बिग जाते, ‘चलि इस कलाकार को तो हम बुला कर डांट दूंगा बाकि किस-किस को डांटता फिरूंगा?’

‘का मतलब?’

‘मतलब ई कि बंबई से ले कर पटना तक हमारे गानों की चोरी हो रही है हमारे ही गानों की धुन, हमारे ही गाने को भोजपुरी से बदल कर हिंदी में केहू से लिखवा-गवा कर फिल्मों में गोविंदा हीरो बने नाच रहे हैं तो हम का करूं? कई लोग भोजपुरियै में ने वोने बदल कर गा रहे हैं तो हम का करूं? केसे-केसे झग ा-ल ाई करूं?’ उनकी तकलीफ जैसे उन की जबान पर आ जाती, ‘अब जब गाना सुनने वालों को ही फिकिर नहीं है तो अकेले हम का करूंगा?’ फिर वह अपने गानों की कलंबी फेहरिस्त गिना जाते कि कौन-कौन से गाने फिल्मों में चुरा लि ग तब जब कि इन गानों के कैसेट पहले ही से बाजार में थे फिर वह ब ी तकलीफ से बताते, ‘बाकिर क्या कीजि गा भोजपुरी गरीब गंवार की भाषा है कोई इस के साथ कुछ भी कर ले भोजपुरहिा लोग चुप लगा जाते हैं जइसे गरीब की लुगाई है भोजपुरी सो सबकी भौजाई है’ वह रुकते नहीं बोलते जाते, ‘लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री हु पाकिस्तान को हरा दि , देश को जिता दि लेकिन भोजपुरी को जिताने की फिकिर नहीं की चंद्रशेखर जी अपने बलिया वाले, अमरीका के जहाज को तेल दे दि इराक की ल ाई में बाकिर भोजपुरी को सांस नहीं दे पा कुछ हजार लोगों की बोली डोगरी को, नेपाली को संविधान में बुला लि लेकिन भोजपुरी को भुला ग तो केहू कुछ बोला का?’

उनका इशारा संविधान की आठवीं अनुसूची में भोजपुरी को शामिल नहीं करने की ओर होता वह कहते, ‘राष्ट्रपति थे बाबू राजेंदर प्रसाद पटना के थे, भोजपुरी में ही खाते-पीते, बतियाते थे, उहो कुछ नहीं कि कसे कब -ब नेता भोजपुरहिा हैं बाकिर भोजपुरी ख़ातिर सब मरे हु हैं तब जब कि करो ों लोग भोजपुरी बोलते हैं, गाते हैं, सुनते हैं हालैंड, मारीशस, सूरीनाम में भोजपुरी जिंदा है, ऊ लोग जिंदा रखे हैं जो लोग इहां से बंधुआ मजूर बन के ग थे बाकिर इहां लोग भुला ग हैं’ वह कहते, ‘आज कल तना टी.वी. चैनल खुले हैं, पंजाबी, कन्न , बंगाली, मद्रासी, यहां तक कि उर्दू में भी पर को चैनल भोजपुरी में काहे नहीं खुला?’ वह जैसे पूछते, ‘भोजपुरी में प्रतिभा नहीं है ? कि गाना नहीं है? कि नेता नहीं है? कि पइसा वाला लोग नहीं है? फिर भी नहीं खुला है भोजपुरी में चैनल दूरदर्शन, आकाशवाणी वाले भी जेतना समय और भाषाओं को देते हैं भोजपुरी को कहां देते हैं?’ कहते-कहते लोककवि बिलबिला जाते अफना जाते कहने लगते, ‘बताइ अब पंजाबी गानों में दलेर मेंहदी आरा हिले, बलिया हिले, छपरा हिलेला दू लाइन गा देते हैं तो लोगों को नीक लगता है मोसल्लम भोजपुरी में फिर काहे नाहीं सुनते हैं लोग? जानते हैं क्यों? वह जैसे पूछते और खुद ही जवाब भी देते, ‘ह नाते कि भोजपुरहिा लोगों में अपनी भाषा के प्रति भावना नहीं है ही लि भोजपुरी भाषा मर रही है’

फिर वह बात ले दे कर भोजपुरी लबम और सी.डी. पर ला कर पटक देते कहते कि, ‘पंजाबी गानों के तने अलबम टी.वी. पर दिखा जाते हैं लेकिन भोजपुरी के नहीं क्योंकि भोजपुरी में अलबम बने ही नहीं काध छिटपुट बने भी होंगे तो हमको पता नहीं’ कह कर वह पूरी तरह निराश हो जाते और उनकी इसी निराशा को विश्राम देता अनूप कि, ‘घबराइ नहीं गुरु जी’ हम आप का वीडियो शूटिंग कर लबम बना ंगे’’ और लोककवि यह जानते हु कि यह साला ठगी बतिया रहा है, उसकी ठगी में समा कर चहकने लगते वह जैसे उसके वशीभूत हो जाते

पर सट्टा करने के पहले पूछते हैं कि लड़कियां कितनी होंगी

Written by दयानंद पांडेय
Wednesday, 09 March 2011 02:25

कई बार कुछ गंवा कर भी पाने की तरकीब आजमा कर सफल हो जाने वाले लोककवि को बार-बार लगता कि अनूप उन्हें सिवाय लूटने के कुछ नहीं कर रहा। पर वह होता है न कि कुछ सपने किसी भी कीमत पर आदमी जोड़ता है भले ही उस सपने के सांचों में फिट न बैठे और निरंतर टूटता ही जाए फिर भी सपना न तोड़ना चाहे ! लोककवि यही कर रहे थे और टूटते जा रहे थे। हंसते-हंसते। बाखुशी।

यह टूटना भी अजीब था उन का।

....जारी **....**

उपन्यासकार दयानंद पांडेय से संपर्क **09415130127, 09335233424** और **dayanand.pandey@yahoo.comT** के जरिए किया जा सकता है **.**

14 / 14